भी तर्क करने में आए दोष का एक प्रकार है। जहाँ व्यक्ति के विचार कई अन्य चीजों से प्रभावित रहते हैं और वह वैसा ही सोचता या देखता है जैसा वह चाहता है।

(iv) व्यक्तिगत लाभ और भेदभाव: कई बार व्यक्ति अपने लाभ के लिए भेदभाव पूर्ण व्यवहार करता है वह अपने फायदे, लगाव, पसंद - नापसंद, के अनुसार चीजों को बढ़ा-चढ़ाकर देखता है।

इस तरह एक आलोचनात्मक चिंतन को अपने अनुभवों और स्मृति के मामले में भी सचेत रहने की जरूरत है।

2) दावों और व्यक्ति की पूर्व जानकारी के बीच विरोधाभास: किसी भी जानकारी की जांच पड़ताल व्यक्ति को अपनी पूर्व जानकारी के परिप्रेक्ष्य में करनी चाहिए। यह पूर्व जानकारी एक पृष्ठ भूमि है जो हम कई बार अपने अनुभवों से इकट्ठा करते हैं, कई किसी और व्यक्ति से और कई बार हमें स्रोत का पता नहीं चलता है इस पूर्व जानकारी को हम सही मान कर चलते हैं, और इसी को आधार बनाकर दावों का आंकलन करते हैं अगर किए गए दावें और पूर्व जानकारी में कोई विरोध नजर नहीं आता तो वह स्वीकार्य होते हैं अन्यथा नहीं, पर कई बार विरोध नजर आने पर भी दावा सच निकल सकता है।

darshanmitra.school.blog

उस समय उससे संबंधित विस्तृत जानकारी हासिल करने की जरूरत होती है। लेखक एक उदाहरण लेता है कि यह दावा "चार्ली की 87 साल की बूढ़ी दादी Michigan Lake में भरी सर्दी में तैराकी की। यह दावा पहली नजर में हमारी पूर्व जानकारी के विरोध में नजर आता है कि 87 साल का व्यक्ति तैर नहीं सकता दूसरा ठंडे पानी में तैराकी करने की कठिनाई, हम स्वयं को भी ऐसा करते हुए सोच नहीं पाते, तो हमें लगता है कि जरूर सामने वाला व्यक्ति इस दावे से हमें बुद्धु बना रहा है पर कई मामलों में विरोध नजर आने पर भी वह सही निकलते हैं।

वस्तुतः सभी दावे अतिश्योक्ति लिए नहीं होते जैसा कि चार्ली की दादी का उदाहरण। कुछ दावे पहली नजर में स्वीकार्य नहीं लगते, पर और जांच करने पर वह सच्चे साबित हो जाते हैं।

इस तरह मूर व पार्कर एक आलोचनात्मक चिंतक को सलाह देते हैं कि जब हमारी पूर्व अर्जित जानकारी और वर्तमान दावे के बीच विरोध नजर आए तो अपनी पूर्व अर्जित जानकारी पर भरोसा करें पर नई जानकारी की सत्यता

की जाँच को लेकर भी अपना मस्तिष्क खुला रखें। इसके लिए लेखक सिरदर्द में सुगंधित तेलों द्वारा आरोग्य प्राप्ति में विश्वास का उदाहरण देता है।

दावों की शुरुआती सत्यता के स्तर होते हैं। कोई अधिक करीब और कोई कम। अपनी जानकारी का क्षेत्र बढ़ाना चाहिए क्योंकि वह दावों को परखने की समझ पैदा करती है।

darshanmitra.school.blog